पाठ 1 मेरा प्रतिपल सुंदर हो

प्रस्तावना- कवि सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित यह कविता उनके द्वारा की गई अपने उज्ज्वल भविष्य की कामना को परिलक्षित करती है। उनकी कामना है कि उनके जीवन का प्रत्येक क्षण सुंदर और सुखमय हो।

मेरा प्रतिपल सुंदर हो,
प्रतिदिन सुंदर; सुखकर हो,

यह पल-पल का लघु जीवन
सुंदर सुखकर, शुचितर हो!

हो बूँदें अस्थिर, लघुतर,
सागर में बूँदें सागर;

यह एक बूँद जीवन का
मोती सा सरस; सुघर हो

मधुऋतु के कुसुम मनोहर,
कुसुमों की ही मधु प्रियतर,

यह एक मुकुल मानस का
प्रमुदित, मोदित मधुमय हो!

मेरा प्रतिपल निर्भय हो,
निःसंशय मंगलमय हो,

यह नव-नव पल का जीवन
प्रतिपल तन्मय, तन्मय हो!

-सुमित्रानंदन पंत

जीवन परिचय- कवि सुमित्रानंदन पंत का जन्म 20 मई, सन् 1900 ई० को अल्मोड़ा के निकट कौसानी नामक ग्राम में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा ग्राम की ही पाठशाला में हुई। इन्हें भारत सरकार द्वारा 'ज्ञानपीठ पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। ये हिंदी काव्यधारा के छायावादी कवियों में से एक थे। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- *वीणा, ग्रंथि, पल्लव, गुंजन, विदंबरा* आदि। पंत जी का निधन 28 दिसंबर, सन् 1977 ई० को हुआ था।

Scanned by CamScanner

अभ्यास

शब्द ज्ञान-

प्रतिपल	-	हर क्षण	लघु	-	छोटा
शुचितर	-	अधिक पवित्र	अस्थिर	-	चंचल
मधुऋतु	-	बसंत ऋतु	मुकुल	-	कली
मानस	-	मन	प्रमुदित	-	आनंदित
निर्भय	-	बिना डर के	निःसंशय	-	बिना संदेह के
तन्मय	-	तल्लीन, मग्न			

विषय-वस्तु का ज्ञान

नीचे दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"मेरा प्रतिपल निर्भय हो,
निःसंशय मंगलमय हो,
यह नव-नव पल का जीवन
प्रतिपल तन्मय, तन्मय हो!"

(क) उपर्युक्त पद्यांश के रचयिता कौन हैं?
(ख) कवि क्या मंगलमय होने की प्रार्थना कर रहा है?
(ग) 'निर्भय' में कौन-सा उपसर्ग है?
(घ) 'जीवन' के दो भिन्न-भिन्न अर्थ बताइए।

प्रत्यास्मरण

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दो-दो पंक्तियों में लिखिए-

(क) कवि ईश्वर से क्या प्रार्थना करता है?
(ख) कवि मन की कली को कैसा बनाना चाहता है?
(ग) कवि जीवन रूपी बूँद को किसके समान बनाना चाहता है?
(घ) आशय स्पष्ट कीजिए-

"यह एक मुकुल मानस का
प्रमुदित, मोदित, मधुमय हो।"

2. कविता की पंक्तियाँ पूरी करिए-

मेरा प्रतिपल _____,
_____ हो
यह पल-पल _____
_____ शुचितर हो।

Scanned by CamScanner

शब्द सामर्थ्य

1. विलोम शब्द लिखिए-

सुंदर	×	_____	सरस	×	_____
लघु	×	_____	संशय	×	_____
जीवन	×	_____	स्थिर	×	_____

2. नीचे लिखे शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-

कुसुम	_____	_____
सागर	_____	_____
जल	_____	_____
नद	_____	_____

3. नीचे लिखे शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाइए-

सुंदर	_____	लघु	_____
मधुर	_____	अमर	_____

वाक्य-विचार

1. दिए गए शब्दों का वाक्य में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए-

प्रतिपल	_____	प्रमुदित	_____
तन्मय	_____	मधुमय	_____
मंगलमय	_____		

पाठ्येतर गतिविधि

चित्र के आधार पर चार पंक्तियों की कविता की रचना करें।

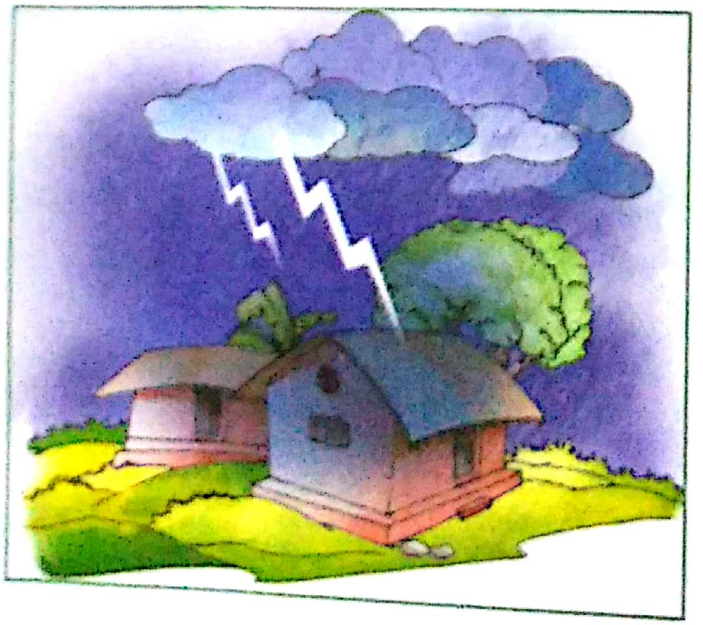

_____

_____

_____

_____

Scanned by CamScanner

जीवन परिचय- प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, सन् 1880 ई० में लमही, वाराणसी में हुआ था। इनके प्रसिद्ध उपन्यास *निर्मला, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, गबन, गोदान* आदि। इनकी कहानियाँ *मानसरोवर* में संकलित हैं जिस आठ भाग हैं। प्रस्तुत कहानी *ईदगाह* में उन्होंने बाल-मनोविज्ञान का सुंदर चित्रण किया है। इनका नि 8 अक्टूबर, सन् 1936 ई० में हुआ।

अभ्यास

शब्द ज्ञान-

प्रभात	-	सुबह	सिजदा	-	घुटने टेककर और सिर झुकाकर प्रणाम कर
गृहस्थी	-	घर-परिवार	भ्रातृत्व	-	भाईचारा
प्रयोजन	-	मतलब	सबील	-	प्याऊ
अनगिनत	-	असंख्य	मातम	-	दुःख मनाना
गत	-	पिछले	सद्भाव	-	भलमनसाहत
अरमान	-	इच्छाएँ	दामन	-	साड़ी का पल्ला, आँचल
जाज़िम	-	चादर-दरी	रहस्य	-	छिपी हुई बात

हिंदी में अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्द- बटन, कॉलेज, क्लब, बिगुल, गिलट

विषय-वस्तु का ज्ञान

नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"ईदगाह जाने की तैयारियाँ हो रही हैं। किसी के कुर्ते में बटन नहीं, कोई पड़ोस के घर सूई-धागा लेने दौड़ा जा रहा है।"

(क) ईदगाह जाने की तैयारी क्यों हो रही है?

(ख) ईद का त्योहार कब मनाया जाता है?

(ग) ईदगाह में नमाज़ पढ़ने के बाद बच्चे और क्या करेंगे?

(घ) हामिद के साथ और कौन-कौन जा रहा है?

प्रत्यास्मरण

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) ईद के दिन बच्चे सबसे अधिक प्रसन्न क्यों हैं?

(ख) हामिद कौन है? उसके पास कितने पैसे हैं?

Scanned by CamScanner

(ग) हामिद के किन-किन दोस्तों ने क्या-क्या खरीदा?

(घ) अपना उपहार देखकर अमीना की क्या दशा हुई?

(ङ) कहानी पढ़कर आपको सबसे अच्छा क्या लगा? दो-तीन पंक्तियों में लिखिए।

2. नीचे दी गई पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

"कितना मनोहर! कितना सुहावना प्रभात है आज का! सूर्य देखो कितना प्यारा, कितना शीतल है! मानो संसार को ईद की बधाई दे रहा हो।"

शब्द सामर्थ्य

1. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

सूर्य _____ _____

पेड़ _____ _____

पानी _____ _____

2. पाठ में आए इन उर्दू शब्दों के हिंदी समानार्थी रूप लिखिए-

ज़्यादा _____

चीज़ _____

खज़ाना _____

जान _____

नज़र _____

मज़ा _____

भाषा-सौंदर्य एवं वाक्य-विचार

प्रेमचंद की कहानियों में मुहावरों और उर्दू शब्दों का बहुतायत में प्रयोग होता है। पाठ में आए निम्नलिखित मुहावरों को रेखा खींचकर उनके अर्थ से मिलाइए और उचित मुहावरों का चुनाव कर वाक्य में भरिए-

भेंट चढ़ना	अत्यधिक प्रसन्न होना
दिल बैठना	दुःख मनाना / रोना
बेड़ा पार लगाना	घबराहट होना
पर लगना	नष्ट हो जाना
धावा बोलना	इच्छाएँ उमड़ना
अरमान निकालना	रक्षा करना
रंग जमाना	खुशियाँ बिखेर देना
मुँह ताकना	मृत्यु होना
मिट्टी में मिलना	टूट पड़ना
छाती पीटना	मुँह की ओर एकटक देखना
गद्गद होना	इच्छा पूरी करना

(क) हामिद के चिमटे ने मित्रों के बीच अपना रंग जमाना दिया।

(ख) सब बच्चे खिलौने और मिठाई खरीदकर अपने अरमान निकाल रहे थे।

Scanned by CamScanner

(ग) सबकी इच्छाओं को ______ गए थे।

(घ) हे ईश्वर! इस कठिन घड़ी में तू ही हमारा ______ सकता है।

(ङ) दादी! सबके खिलौने ______ जाएँगे परंतु मेरा चिमटा जीता-जागता सदा रोटियाँ सेंकता रहेगा।

पाठ्येतर गतिविधि

1. मानसरोवर में संकलित कहानियाँ छोटी-छोटी कहानियों की पुस्तकों के रूप में बाज़ार/पुस्तकालय में उपलब्ध हैं। उन्हें पढ़िए।

2. बच्चो! तुम कभी न कभी किसी मेले में गए होगे। नीचे एक मेले का दृश्य है, इसे देखकर एक अनुच्छेद में इसका वर्णन कीजिए। शीर्षक है- 'मेले में एक शाम'।

Scanned by CamScanner

अभ्यास

शब्द ज्ञान-

प्रचंड	-	तेज़, भीषण	विषण्ण	-	उदास
वीथियों	-	गलियों में	स्मिति	-	मुसकराहट
प्रमुदित	-	आनंदित	एकाकी	-	अकेला
अभिलाषी	-	इच्छा करनेवाला	विलीन	-	खो जाना
तुषारकण	-	ओस का कण	निर्निमेष	-	बिना पलक झपकाए
रमणियों	-	स्त्रियों	रज	-	धूल
वृंद	-	झुंड	कणिका	-	छोटा कण

Scanned by CamScanner

विशेष- इन शब्दों को इस तरह भी लिख सकते हैं-

वाद्‌य - वाद्य

बाह्‌य - बाह्य

बुद्‌ध - बुद्ध

विषय-वस्तु का ज्ञान

नीचे दिए गए गद्‌यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"सुदास स्तब्ध होकर खड़ा था। उसके मुँह से एक शब्द भी नहीं निकला। वह तो निहार रहा था, निर्निमेष भा... उस साधु की ओर।"

(क) सुदास स्तब्ध क्यों खड़ा था?

(ख) वह कहाँ से आया था?

(ग) वह साधु कौन था?

(घ) वह वहाँ क्या करने आया था?

प्रत्यास्मरण

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) कमल-पुष्प को देखकर सुदास का मन क्यों नाच उठा?

(ख) कमलदल लेने की होड़ में राजा को बुरा न लगे, भक्तजन ने उनसे क्या कहा?

(ग) भगवान बुद्‌ध के दर्शन करने कौन-कौन जा रहे थे?

(घ) सुदास ने पुष्प बेचने का विचार क्यों त्याग दिया?

(ङ) सुदास ने भगवान बुद्‌ध से पुष्प का मूल्य न माँगकर चरण-रज की एक कणिका क्यों माँगी?

2. कारण बताइए-

(क) कुंज-वीथियों और वन-उपवनों में समस्त तरुगण शिशुविहीन माता-पिता की तरह उदासीन से खड़े थे।

(ख) सुदास के शकुन सफल हो गए।

शब्द सामर्थ्य

1. र के विभिन्न रूपों के शब्द पाठ में से चुनकर लिखो-

र्‌ [ ] – स्वर रहित र सुवर्ण ____________

____

र [ ] – स्वर सहित र प्रफुल्ल ____________

____

Scanned by CamScanner

2. वर्ण-विच्छेद कीजिए-

प्रदान – प् + र् + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

पूर्ण – प् + ऊ + ___ + ___ + ___

खर्च – ___ + ___ + ___ + ___ + ___

प्रस्तुत – ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___ + ___

श्री – ___ + ___ + ___

क्षमा – ___ + ___ + ___ + ___ + ___

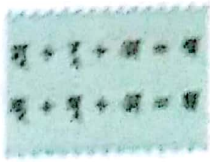

3. नीचे लिखे वाक्यांशों के लिए एक शब्द लिखो-

बिना पलक झपकाए – निर्निमेष

इच्छा करनेवाला – अभिलाषी

राजा के रहने का स्थान – राजमहल

पेड़-पौधों की देखभाल करनेवाला – माली

वाक्य-विचार

1. संस्कृत से हिंदी में आए हुए शब्द, जो अपने मूलरूप में ही लिखे जाते हैं, इन्हें तत्सम शब्द कहते हैं और जो शब्द अपने परिवर्तित रूप में प्रयोग किए जाते हैं, तद्भव शब्द कहलाते हैं।

दिए गए शब्दों का तत्सम रूप पाठ में से देखकर लिखिए-

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
सीत	शीत	कोयल	कोकिल
मोल	मूल्य	सोना	स्वर्ण
फूल	पुष्प	भगत	भक्त

2. पूर्णविराम [।] अल्पविराम [,] अर्द्धविराम [;]

प्रश्नवाचक [?] विस्मयादिबोधक [!] योजक या विभाजक [-]

वाक्यों में उचित स्थान पर विराम-चिह्न लगाइए-

(क) सुदास जल्दी जल्दी चलकर राजमहल आया

(ख) अरे अभी तक कोई राजमहल के बाहर नहीं निकला

(ग) ये सब कहाँ जा रहे हैं

(घ) स्त्री पुरुष बूढ़े बच्चे सभी कहाँ जा रहे हैं

पाठ्येतर गतिविधि

रवींद्रनाथ ठाकुर बँगला भाषा के मूर्धन्य साहित्यकार थे। वे न केवल साहित्यकार थे बल्कि एक चित्रकार, शिक्षाविद्, संगीतकार भी थे। 'विश्वभारती' (शांति निकेतन) उनके स्वप्नों का साकार रूप है, जहाँ साहित्य, कला, भाषा का ज्ञान प्राप्त करने देश-विदेश से विद्यार्थी आते हैं। हमारा 'राष्ट्रगान' गुरुदेव की ही रचना है।

रवींद्रनाथ टैगोर की अन्य रचनाओं को पढ़िए।

Scanned by CamScanner

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बाल	बालपन
बच्चा	बचपन
पशु	पशुता / पशुत्व
डाकू	डाका / डकैती
मानव	मानवता
साधु	साधुता
दास	दासता
शिक्षक	शिक्षा
लड़का	लड़कपन
शत्रु	शत्रुता
मित्र	मित्रता / मैत्री
अमर	अमरता
देव	देवत्व
वकील	वकालत
युवक	यौवन

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
बालक	बालकपन
मनुष्य	मनुष्यता / मनुष्यत्व
सेवक	सेवा
पंड़ित	पांडित्य
गज	गजत्व
शिशु	शैशव / शिशुता
वीर	वीरता / वीरत्व
दानव	दानवता
रंग	रंगत
प्रभु	प्रभुता
नारी	नारीत्व
बूढ़ा	बुढ़ापा
व्यक्ति	व्यक्तित्व
इनसान	इनसानियत

सर्वनाम शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
मम	ममता / ममत्व
पराया	परायापन
निज	निजता / निजत्व

सर्वनाम	भाववाचक संज्ञा
अहं	अहंकार
अपना	अपनापन / अपनत्व
आप	आपा

Scanned by CamScanner

अध्याय 5

(Vocabulary)

र्व-ज्ञान संबंधी प्रश्न

क) आप अपने अपने अध्यापक को किन-किन नामों से पुकारते हैं?

ख) 'उपवन में फूल खिले हैं।' इस वाक्य में ऐसे कौन-से दो शब्द हैं; जिन्हें किसी और नाम से भी जाना जा सकता है?

नीचे दिए गए चित्रों को देखिए तथा उनके साथ दिए गए शब्दों को पढ़िए–

कमल

जलज, नीरज, पंकज, राजीव

पत्ता

पत्र, पर्ण, दल, किसलय

बंदर

वानर, कपि, शाखामृग, मर्कट

सूर्य

दिनकर, रवि, भानु, भास्कर

पर्युक्त चित्रों के साथ उनके एक समान अर्थ बतानेवाले कई शब्द लिखे गए हैं। वे शब्द, जो एक ही अर्थ ोध कराते हैं; उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं।

क) पर्यायवाची शब्द (Synonyms)

किसी शब्द विशेष के लिए प्रयोग में लाए जाने वाले समानार्थक शब्द पर्यायवाची शब्द कहलाते हैं।

र्यायवाची शब्द का दूसरा नाम समानार्थक शब्द भी है। पर्यायवाची शब्द अधिकतर रूढ़ शब्द होते हैं।

ुछ पर्यायवाची / समानार्थक शब्द

1. अंग – गात, देह, शरीर, तन, कलेवर
2. अग्नि – अनल, आग, पावक, दहन, ज्वलन, वह्नि
3. अनुपम – अद्‌भुत, अनूठा, अनोखा, अपूर्व
4. अमृत – अमिय, पीयूष, सुधा, सोम
5. अर्जुन – कौंतेय, धनंजय, पार्थ
6. अरण्य – कानन, जंगल, वन, विपिन
7. अश्व – घोटक, घोड़ा, तुरंग, गंधर्व
8. असुर – दानव, दनुज, दैत्य, निशाचर
9. अहंकार – अहं, अभिमान, गर्व, घमंड, दर्प

Scanned by CamScanner

10. आँख – चक्षु, दृग, नेत्र, नयन, लोचन
11. आनंद – आमोद, उल्लास, प्रमोद, विहार, सुख, हर्ष
12. आकाश – आसमान, गगन, नभ, व्योम
13. आम – आम्र, रसाल, कमलवल्लभ
14. इच्छा – आकांक्षा, अभिलाषा, उत्कंठा, मनोरथ
15. इंद्र – देवराज, महेंद्र, शचीपति, सुखपति
16. ईश्वर – अगोचर, अनादि, परमेश्वर, परमात्मा
17. उजाला – आलोक, तेज़, दीप्ति, प्रकाश, प्रभा
18. कन्या – कुमारी, पुत्री, बेटी, सुता, आत्मजा
19. कपड़ा – अंबर, चीर, पट, वस्त्र, वसन
20. कामदेव – काम, अनंग, मदन
21. किरण – कर, अंशु, किरन, मयूख
22. कोयल – कोकिल, पिक, वसंतदूत
23. कौआ – काक, काग, वायस, अरिष्ट
24. कृष्ण – गोपाल, नंदनंदन, मुरलीधर, वंशीधर
25. दुष्ट – कुटिल, दुर्जन, नीच, धूर्त, खल
26. गंगा – देवनदी, भागीरथी, मंदाकिनी, सुरसरि
27. गणेश – गजानन, गौरीसुत, गणपति, मोदकप्रिय
28. गृह – घर, निकेतन, आवास, धाम
29. चतुर – कुशल, निपुण, पटु, दक्ष
30. चंद्र – चंद्रमा, चाँद, मयंक, सुधाकर, शशि
31. चाँदनी – चंद्रिका, अमृत-तरंगिणी, कौमुदी, ज्योत्स्ना
32. जल – तोय, नीर, पानी, वारि
33. तलवार – असि, कृपाण, करवाल, चंद्रहास
34. तालाब – ताल, जलाशय, सर, सरोवर
35. दिन – दिवा, दिवस, वार, वासर
36. देवता – देव, सुर, आदित्य, अमर
37. दास – नौकर, चाकर, परिचारक, सेवक
38. नदी – सरिता, तटिनी, तरंगिणी, आपगा
39. नौका – जलयान, नाव, जलपात्र, बेड़ा
40. पक्षी – खग, परिंदा, शकुनि, द्विज
41. पत्नी – वधू, प्राणप्रिय, भार्या, अर्धांगिनी
42. पर्वत – अचल, तुंग, गिरि, नग, पहाड़
43. पार्वती – आर्या, उमा, शैलसुता, सती

Scanned by CamScanner

44. पुत्र – तनय, पूत, बेटा, सुत, आत्मज
45. पुत्री – आत्मजा, बेटी, तनुजा, लड़की, सुता
46. पेड़ – तरु, पादप, वृक्ष, विटप
47. प्रकाश – रोशनी, उजाला, ज्योति, प्रभा, छवि
48. पुष्प – फूल, सुमन, कुसुम, प्रसून
49. पृथ्वी – जगती, धरणी, धरा, भू, भूमि
50. भ्रमर – अलि, भौंरा, मधुकर, मधुप
51. मछली – मत्स्य, मीन, मकर
52. मेघ – बादल, जलधर, वारिद, पयोद
53. मोर – केकी, नीलकंठ, मयूर, भुजंग
54. राजा – नरेश, नरपति, भूपति, महीपति
55. रात – निशा, रजनी, यामिनी
56. वसंत – ऋतुराज, बहार, मधु
57. शिक्षक – अध्यापक, आचार्य, उपाध्याय, गुरु
58. सरस्वती – शारदा, वाणी, वागेश्वरी, वागीश
59. साँप – नाग, फणी, भुजंग, विषधर
60. सिंह – केसरी, मृगेंद्र, वनपति, शेर, वनराज
61. सोना – कंचन, कनक, स्वर्ण, हेम
62. स्त्री – अबला, कामिनी, नारी, ललना, रमणी
63. स्वर्ग – देवलोक, सुरलोक, फलोदय
64. हवा – पवन, वायु, वात, समीर

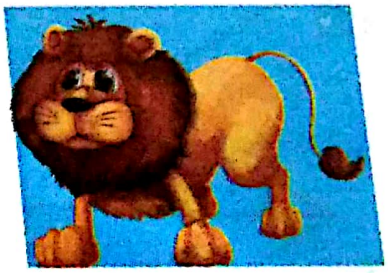

आओ, दोहराएँ

Scanned by CamScanner

(ग) निशाचर – .....

.....

(घ) जिज्ञासु – .....

.....

(ङ) अनुज – .....

.....

(च) दुभाषिया – .....

.....

(घ) अनेकार्थक शब्द (Words with Various Meanings)

पूर्व-ज्ञान संबंधी प्रश्न

(क) अनेकार्थक शब्द का अर्थ बताइए।

(ख) 'काल' शब्द के दो अर्थ बताइए।

अनेकार्थक शब्द

एक से अधिक अर्थ बतानेवाले शब्दों को अनेकार्थी शब्द कहते हैं।

प्रत्येक शब्द का एक मूल अर्थ होता है, किंतु विभिन्न परिस्थितियों या संदर्भों में वे भिन्न अर्थ भी करते हैं। ऐसे शब्द अनेकार्थक शब्द कहलाते हैं।

ऐसे कुछ अनेकार्थक शब्दों को पढ़िए तथा समझिए–

कुछ शब्दों के प्रसंगानुसार अनेक अर्थ होते हैं। ऐसे शब्द अनेकार्थक शब्द होते हैं; जैसे–

1. अंबर – आकाश, वस्त्र, कपास, केसर
2. अंक – नाटक का अंक, गिनती के अंक, संख्या का चिह्न, गोद
3. अमृत – पारा, दूध, जल, स्वर्ण, अन्न
4. अनंत – आकाश, ब्रह्मा, विष्णु, सर्पों का राजा
5. अग्र – मुख्य, श्रेष्ठ, सिरा, पहले
6. ईश्वर – परमात्मा, स्वामी
7. उत्तर – उत्तर दिशा, हल, ज़वाब
8. कल – मधुर ध्वनि, मशीन, बीता हुआ दिन, अगला दिन
9. कर – हाथ, टैक्स, किरण, हाथी की सूँड़
10. काल – समय, यमराज, मृत्यु, अकाल
11. कृष्ण – काला, श्रीकृष्ण
12. कुल – केवल, सब, वंश
13. कनक – गेहूँ, सोना, धतूरा

Scanned by CamScanner

14. कक्ष – कमरा, बंगला, श्रेणी
15. गुरु – भारी, वृहस्पति, शिक्षक
16. घन – बादल, भारी, घना, हथौड़ा
17. घट – देह, घड़ा, कम, मन
18. चपला – लक्ष्मी, चंचल स्त्री, बिजली
19. तीर – नदी का किनारा, बाण, पास, समीप
20. नाग – हाथी, सर्प, बादल, एक पर्वत
21. पय – अमृत, जल, दूध
22. पद – ओहदा, गीत, शब्द, स्थान, पैर
23. पत्र – चिट्ठी, पत्ता, पंख
24. पृष्ठ – पीठ, पीछे का भाग, पन्ना
25. पूर्व – पहले, एक दिशा, अग्र भाग
26. अलि – कोयल, कौआ, भौंरा, बिच्छू
27. वार – दिन, आक्रमण, प्रहार
28. सारंग – मोर, सर्प, सिंह, मेघ, हाथी, स्त्री
29. फल – नतीज़ा, लाभ, सेवा, भाले की नोक
30. भाग – हिस्सा, भाग्य, दौड़
31. मित्र – दोस्त, सहयोगी, प्रिय
32. रक्त – खून, लाल
33. बाल – बालक, केश, बाला
34. वर्ण – जाति, अक्षर, रंग
35. सुर – देवता, स्वर और ताल
36. सर – तालाब, बाण, चिता
37. शिव – वेद, मंगल, महादेव, शृगाल
38. हरि – श्रीकृष्ण, हाथी, घोड़ा, वानर, ब्रह्मा, शिव, कोयल
39. क्षेत्र – खेत, शरीर, तीर्थ
40. सूत – धागा, सारथी

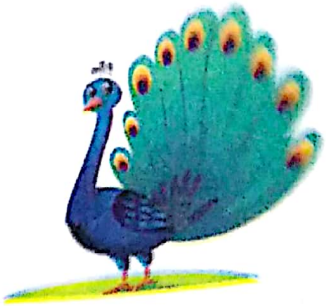

आओ, दोहराएँ

- एक से अधिक अर्थ बतानेवाले शब्द अनेकार्थी शब्द कहलाते हैं।

Scanned by CamScanner

अध्याय 12

कारक
(Case)

पूर्व-ज्ञान संबंधी प्रश्न

(क) 'ने', 'को', 'से', 'के लिए', 'में', 'पर' आदि चिह्न क्या कहलाते हैं?
(ख) 'शोभित छत से गिर गया'। इस वाक्य में प्रयुक्त कारक शब्द बताइए।
(ग) 'मोर पेड़ बैठा है।' क्या यह पूर्ण वाक्य है?
(घ) कारक के कोई दो भेद बताइए।

पाठ-परिचय

कारक की परिभाषा, कारक के भेद– कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, संप्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक, करण कारक तथा अपादान कारक में अंतर, और संप्रदान कारक में अंतर।

कारक का शाब्दिक अर्थ है– क्रिया करनेवाला।

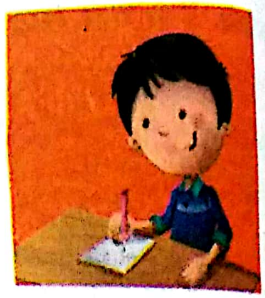

नीचे दिए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ो–

1. प्रदीप ने साँप को देखा।
2. अमित ने कलम से पत्र लिखा।
3. वह माता-पिता के लिए फल लाया।
4. वृक्ष से पत्ते गिर रहे हैं।
5. मेरे पास शेखर की पुस्तक है।
6. पक्षी आकाश में उड़ रहे हैं।
7. हे परमात्मा! हम सब पर दया करो।

उपर्युक्त सभी वाक्यों में ने, को, से, के लिए, से, की, में, हे, पर आदि विशेष चिह्न लगे हुए हैं। ये विभक्तियाँ कहलाती हैं, जिन्हें परसर्ग भी कहते हैं। पर का अर्थ पीछे और सर्ग का अर्थ जुड़ना है। ये चिह्न संज्ञा अथवा सर्वनाम शब्दों के बाद जुड़ते हैं; जैसे– आनंद ने दूध पिया। इस वाक्य में आनंद क्रिया का कर्ता है और दूध उसका कर्म है अतः आनंद कर्ता कारक है और दूध कर्म कारक है। अतः

संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका क्रिया तथा वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ संबंध जाना जाए उसे कारक कहते हैं।

विभक्ति-चिह्न– कारक को स्पष्ट करने के लिए संज्ञा या सर्वनाम के साथ जो चिह्न लगाए जाते हैं, उन्हें विभक्तियाँ या परसर्ग कहते हैं।

Scanned by CamScanner

कारक के भेद (Kinds of Case)

हिंदी में **आठ** कारक होते हैं, पर अब कुछ विद्वान **छह** कारक मानने लगे हैं। वे संबंध और संबोधन को कारक नहीं मानते।

कारक और उनके विभक्ति-चिह्नों की तालिका इस प्रकार है–

1.	कर्ता कारक (Nominative Case)	ने
2.	कर्म कारक (Objective Case)	को
3.	करण कारक (Instrumental Case)	से (के द्वारा)
4.	संप्रदान कारक (Dative Case)	के लिए या को
5.	अपादान कारक (Ablative Case)	से (जुदाई)
6.	संबंध कारक (Genitive Case)	का / के / की
7.	अधिकरण कारक (Locative Case)	में / पर
8.	संबोधन कारक (Vocative Case)	हे ! / अरे !

1. **कर्ता कारक** (Nominative Case)– वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम द्वारा काम को करने वाले का बोध होता है, वह **कर्ता कारक** होता है; जैसे–

(क) **सौरभ** आम खाता है।

(ख) **श्रीकृष्ण** ने कंस को मारा।

पहले वाक्य में **सौरभ** खाने का काम करता है, इसलिए वह कर्ता कारक है। दूसरे वाक्य में **श्रीकृष्ण ने** कंस को मारने का कार्य किया। इसलिए **श्रीकृष्ण** कर्ता कारक है। कर्ता कारक का चिह्न **ने** है; लेकिन **ने** का प्रयोग सर्वत्र नहीं होता है जैसा कि पहले वाक्य में **ने** का प्रयोग नहीं किया गया है।

कर्ता कारक के विभक्ति-चिह्न **ने** का प्रयोग भूतकाल में ही होता है; जैसे–

(क) पुलिस **ने** मुजरिम को पकड़ा।

(ख) सुनील **ने** कविता सुनाई।

2. **कर्म कारक** (Objective Case)– वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पद पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, उसे **कर्म कारक** कहते हैं; जैसे–

(क) पिता ने **बेटे को** समझाया।

(ख) माली **पौधों को** पानी दे रहा है।

पहले वाक्य में **समझाया** क्रिया पद के व्यापार का फल **बेटे** पर पड़ रहा है; इसलिए **बेटे को** कर्म कारक है। कर्म कारक के लिए **को** परसर्ग (विभक्ति-चिह्न) का प्रयोग होता है।

दूसरे वाक्य में माली की क्रिया (पानी देना) का फल **पौधों** पर पड़ रहा है। अतः **पौधों को** शब्द कर्म कारक के रूप में आया है।

कभी-कभी कर्म कारक बिना विभक्ति-चिह्न (को) के भी होता है; जैसे–

आकाश **किताब** पढ़ रहा है। यहाँ 'किताब' कर्म के साथ कोई विभक्ति-चिह्न नहीं है।

Scanned by CamScanner

विशेष– कभी-कभी वाक्य में दो कर्म भी प्रयुक्त होते हैं– एक मुख्य कर्म और दूसरा गौण कर्म। गौ
व्यक्तिबोधक होता है;
जैसे–मैंने पिता जी को पत्र लिखा।
उपर्युक्त वाक्य में पिता जी और पत्र दो कर्म हैं। पिता जी गौण कर्म है और पत्र मुख्य कर्म।

3. करण कारक (Instrumental Case)– जिस साधन से क्रिया संपन्न होती है, वह संज्ञा या सर्वनाम प
कारक होता है; जैसे–

(क) सुरेश कलम से लिख रहा है।
(ख) चाकू से आम काटो।
उपर्युक्त वाक्यों में कलम और चाकू करण कारक हैं।
करण कारक के लिए से तथा के द्वारा विभक्ति-चिह्न का प्रयोग होता है।

4. संप्रदान कारक (Dative Case)– कर्ता द्वारा जिस संज्ञा शब्द के लिए क्रिया संपन्न होती है, उसे
कारक कहते हैं; जैसे–
(क) राजा ने ब्राह्मण को दान दिया।
(ख) आशा ने सैनिकों के लिए राष्ट्र- गीत गया।
संप्रदान कारक में के लिए तथा को विभक्ति चिह्नों का प्रयोग होता है।
उपर्युक्त वाक्यों में क्रिया ब्राह्मण को दान देने के लिए तथा सैनिकों के लिए संपन्न हो रही है।
कारक में देने या उपकार करने का भाव निहित होता है।

5. अपादान कारक (Ablative Case)– जिस संज्ञा शब्द से अलग होने, तुलना करने अथवा डरने का भा
हो, उसे अपादान कारक कहते हैं; जैसे–
(क) शोभित घोड़े से गिर पड़ा।
(ख) खिलाड़ी मैदान से चले गए।
उपर्युक्त वाक्यों में घोड़े से गिरने और मैदान से अलग होने का भाव प्रकट होता है।
अपादान कारक में से (जुदाई) विभक्ति-चिह्न का प्रयोग होता है।

6. संबंध कारक (Genitive Case)– संज्ञा और सर्वनाम के जिस रूप से उसका संबंध अन्य वस्तुओं या व
के साथ जाना जाए, उसे संबंध कारक कहते हैं; जैसे–
(क) यह विवेक की पुस्तक है।
(ख) यह मेरा घोड़ा है।
संबंध कारक के विभक्ति-चिह्न का, के, की, रा, रे, री हैं।
उपर्युक्त वाक्यों में पुस्तक का संबंध विवेक से तथा घोड़े का संबंध मेरा से है।

7. अधिकरण कारक (Locative Case)– जिस पद से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण
कहते हैं; जैसे–
(क) पक्षी आकाश में उड़ते हैं।
(ख) पुस्तक मेज़ पर है।
उपर्युक्त वाक्यों में आकाश और मेज़ उन स्थानों का बोध कराते हैं, जहाँ कोई वस्तु या प्राणी स्थित है। इसलिए आकाश में और मेज़ पर अधिकरण कारक हैं।
अधिकरण कारक में प्राय: में और पर विभक्ति-चिह्न का प्रयोग होता है।

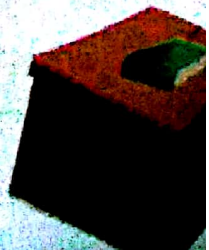

Scanned by CamScanner

संबोधन कारक (Vocative Case)– पद के जिस रूप से किसी को पुकारा या संबोधित किया जाता है, उसे संबोधन कारक कहते हैं; जैसे–

(क) अरे भाई ! तुमने तो कमाल कर दिया।

(ख) हे ईश्वर ! ये क्या हो गया?

इन दोनों वाक्यों में अरे! और हे! संबोधन कारक के चिह्न हैं।

विशेष– संबोधन कारक के विभक्ति-चिह्न का प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम से पहले किया जाता है।

कारक तथा अपादान कारक में अंतर

कारक तथा अपादान कारक दोनों का विभक्ति चिह्न से है किंतु अर्थ की दृष्टि से दोनों में अंतर है। करण क में से परसर्ग (विभक्ति चिह्न) माध्यम का सूचक है; जबकि अपादान कारक में से परसर्ग पृथकता का क है।

रण देखिए तथा समझिए–

(क) राम साइकिल से आता है। (करण कारक)

(ख) रवि कार से उतरा। (अपादान कारक)

(ग) पेड़ से फल गिरते हैं। (अपादान कारक)

(घ) वह गाड़ी से दिल्ली गया। (करण कारक)

(ङ) वह चलती गाड़ी से कूद गया। (अपादान कारक)

र्युक्त वाक्यों में साइकिल से आना करण कारक है तथा कार से उतरना अपादान कारक। इसी प्रकार पेड़ फल गिरना, गाड़ी से कूदना अपादान कारक के उदाहरण हैं; जबकि गाड़ी से आना करण कारक का हरण है।

कारक तथा संप्रदान कारक में अंतर

कारक तथा संप्रदान कारक दोनों का विभक्ति चिह्न को है किंतु दोनों के अर्थ में विभिन्नता है। कर्म कारक जिस शब्द के साथ को परसर्ग जुड़ता है, उसपर क्रिया का फल पड़ता है, जबकि संप्रदान कारक में को परसर्ग अर्थ के लिए होता है अर्थात् इसमें किसी के लिए कुछ करने का भाव निहित होता है।

हरण देखिए तथा समझिए–

(क) शिकारी ने हिरन को मारा। (कर्म कारक)

(ख) गरीबों को खाना दे दो। (संप्रदान कारक)

(ग) अध्यापिका ने छात्रा को बुलाया। (कर्म कारक)

(घ) अध्यापिका ने छात्रा को पुस्तक दी। (संप्रदान कारक)

र्युक्त पहले और तीसरे वाक्य में मारा और बुलाया क्रिया का कर्म है, जबकि दूसरे और चौथे वाक्य में गरीबों और छात्रा को से अभिप्राय है; गरीबों के लिए और छात्रा के लिए क्रिया की जा रही है; अतः यहाँ संप्रदान रक है।

Scanned by CamScanner

आओ, दोहराएँ

- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका क्रिया तथा वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ संबंध जाना उसे **कारक** कहते हैं।
- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया करने वाले का बोध होता है, उसे **कर्ता कारक** कहते हैं।
- वाक्य में जिस संज्ञा या सर्वनाम पद पर क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है, उसे **कर्म कारक** कहते हैं।
- कर्ता जिस साधन की मदद से कार्य करता है, उसे **करण कारक** कहते हैं।
- कर्ता द्वारा जिस साधन से संज्ञा के लिए क्रिया की जाती है, उसे **संप्रदान कारक** कहते हैं।
- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से अलग होने, तुलना करने या डरने का भाव प्रकट हो, उसे अ **कारक** कहते हैं।
- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से एक वस्तु या व्यक्ति का संबंध दूसरी वस्तु या व्यक्ति से जाना उसे **संबंध कारक** कहते हैं।
- संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध हो, उसे **अधिकरण कारक** कहते हैं।
- पद के जिस रूप से किसी को पुकारा या संबोधित किया जाता है, उसे **संबोधन कारक** कहते हैं।
- कर्ता कारक से लेकर अधिकरण कारक तक के सभी कारक-चिह्नों का प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम के बाद होता है, जबकि संबोधन कारक के चिह्न का प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम से पहले किया जाता

अभ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

(क) कारक की परिभाषा लिखिए।

(ख) कारक के कितने भेद हैं? नाम लिखिए।

(ग) करण कारक तथा अपादान कारक में अंतर उदाहरण सहित समझाइए।

2. **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–**

(क) कारक के जिस रूप से क्रिया के करनेवाले का बोध होता है, उसे .... कहते हैं।

(ख) संज्ञा के जिस रूप से एक वस्तु का दूसरे से पृथक होना पाया जाए, उसे .... कारक कहते हैं।

(ग) संज्ञा के जिस रूप से क्रिया के आधार का बोध होता है, उसे .... कारक कहते हैं।

(घ) 'बालक <u>फुटबॉल से</u> खेलते हैं।' वाक्य में रेखांकित शब्द .... कारक का बोध कराता है।

(ङ) संज्ञा के जिस रूप से किसी वस्तु का दूसरी वस्तु से संबंध प्रकट हो, उसे .... कारक कहते हैं।

(च) हे !, अरे ! .... कारक हैं।

3. **निम्नलिखित वाक्यों के रेखांकित पदों में प्रयुक्त कारकों के नाम लिखिए–**

वाक्य	कारक का नाम
(क) दादी ने कहानी सुनाई।	....
(ख) यह विभा की गुड़िया है।	....

Scanned by CamScanner

(ग) तालाब में बहुत मछलियाँ हैं। .....

(घ) श्रीराम ने रावण को बाण से मारा। .....

(ङ) गुरु जी को फल दे दो। .....

(च) ऊषा ने कलम से पुस्तक लिखी। .....

(छ) गिलास मेज़ से गिर गया। .....

(ज) गीतांजली जा रही है। .....

(झ) दुकानदार ने बोरी से चावल निकाला। .....

4. गलत विभक्ति-चिह्नों के स्थान पर सही विभक्ति चिह्न लगाकर वाक्यों को दोबारा लिखिए–

(क) बच्चों को खाना खा लिया है। .....

(ख) यहाँ पढ़ने का पुस्तकें नहीं मिलतीं। .....

(ग) वह चाकू में सेब काट रही है। .....

(घ) छत में कौन हैं? .....

(ङ) माँ ने बोतल में बच्चे को दूध पिलाया। .....

5. उपयुक्त कारक-चिह्न लगाकर वाक्य पूरे कीजिए–

(क) दानी ..... भिक्षुओं ..... भरपेट भोजन दिया।

(ख) महादेवी ..... गाय ..... नाम गौरा था।

(ग) सुमिता ..... पेंसिल ..... चित्र बनाया।

(घ) स्याही ..... दवात किसकी है?

(ङ) बिल्ली ..... चूहे ..... पंजे ..... जकड़ लिया।

(च) मैं माता जी ..... फल लाया हूँ।

(छ) महिमा मोहन ..... मौसी है।

(ज) पर्वतों ..... बर्फ़ गिर रही है।

6. 'से' विभक्ति-चिह्न का करण कारक तथा अपादान कारक के रूप में प्रयोग करके दो-दो वाक्य बनाइए।

7. उचित मिलान कीजिए–

कारक	परसर्ग	उदाहरण
कर्ता	से	रोहित जाता है।
कर्म	का, के, की	वह चाकू से सेब काटता है।
करण	को	पुस्तक मेज़ पर रखी है।
संप्रदान	में, पर	पिता जी ने खाना खाया।
अपादान	ने	तुम्हारी बहन आ रही है।
संबंध	के लिए, को	आम पेड़ से गिर गया।
अधिकरण	से (पृथक)	माँ ने बच्चों को फल दिए।

रचनात्मक कार्य

- कारक के भेद तथा उनके विभक्ति-चिह्न लिखकर उदाहरण सहित चार्ट बनाइए।

Scanned by CamScanner

अध्याय 22

मुहावरे और लोकोक्तियाँ
(Idioms and Proverbs)

मुहावरा शब्द अरबी भाषा से लिया गया है जिसका शाब्दिक अर्थ है– अभ्यास। मुहावरे में शाब्दिक अर्थ न लेकर कोई अन्य अर्थ लिया जाता है।

जब कोई वाक्यांश अपने शाब्दिक (सामान्य) अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ में प्रयुक्त होता है, उसे मुहावरा कहते हैं।

इन उदाहरणों को देखिए–

(क) जब मैंने मित्र से सौ रुपये उधार माँगे, तो उसने मुझे अँगूठा दिखा दिया।

(ख) जब ओखली में सिर दिया तो मूसल से क्या डरना।

उपरिलिखित पहले वाक्य में अँगूठा दिखाने का अर्थ यह नहीं है कि अँगूठा दिखाकर चिढ़ा दिया, बल्कि इस वाक्यांश का अर्थ समय पड़ने पर साफ़ मना कर देना है। इसी प्रकार दूसरे वाक्य में ओखली में सिर देने का अर्थ सिर को ओखली में डालना नहीं है; अपितु जान-बूझकर आफ़त में पड़ना है।

मुहावरों का प्रयोग वाक्यों की सुंदरता को बढ़ाने के लिए किया जाता है।

इनका प्रयोग भाषा को रोचक तथा प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है। इनके प्रयोग से भाषा सरल, स्पष्ट व सुंदर हो जाती है।

वाक्यों में प्रयोग करते समय मुहावरों में आए क्रिया शब्दों के रूप वचन, लिंग, पुरुष तथा काल के अनुसार बदलते रहते हैं।

मुहावरों का प्रयोग उसके मूल रूप में किया जाता है।

मुहावरों के अर्थ तथा प्रयोग

1. अक्ल का दुश्मन (मूर्ख)–दीपक की समझ में कुछ नहीं आएगा, क्योंकि वह तो *अक्ल का दुश्मन* है।
2. अपने पाँवों पर आप कुल्हाड़ी मारना (अपना नुकसान खुद करना)–राजू ने नौकरी छोड़कर *अपने पाँवों पर आप कुल्हाड़ी मारी* है।
3. अपना उल्लू सीधा करना (अपना मतलब निकालना)–उसपर भरोसा मत करो, वह सिर्फ़ *अपना उल्लू सीधा करता* है।
4. अँगूठा दिखाना (साफ़ इनकार करना)–जब मैंने सुरेश से पैसे माँगे तो उसने *अँगूठा दिखा* दिया।
5. अंग-अंग ढीला होना (बहुत थक जाना)–मज़दूर सुबह से काम कर रहा है, अतः उसका *अंग-अंग ढीला हो गया* है।
6. अंधे की लकड़ी (एकमात्र सहारा)–विशाल अपने माता-पिता के लिए *अंधे की लकड़ी* है।
7. अक्ल का पुतला (असाधारण बुद्धिमान)–महेश तो *अक्ल का पुतला* है उसके साथ बहस मत करो।
8. अपनी खिचड़ी अलग पकाना (सबसे अलग रहना)–सबके साथ मिलकर रहना चाहिए, *अपनी खिचड़ी अलग पकाने* से कोई लाभ नहीं।

Scanned by CamScanner

9. अंत पाना (रहस्य पाना)–ईश्वर की लीला का *अंत किसने पाया है?*
10. आँखें दिखाना (गुस्सा करना)–अंक कम आने पर मुझे मेरे माता-पिता ने *आँखें दिखाईं।*
11. आकाश से बातें करना (बहुत ऊँचा होना)–दिल्ली की कुतुबमीनार *आकाश से बातें करती* है।
12. आँखों में धूल झोंकना (धोखा देना)–चोर सबकी *आँखों में धूल झोंककर* गायब हो गया।
13. आसमान सिर पर उठाना (बहुत शोर करना)–अध्यापक के कक्षा में न होने के कारण बच्चों ने *आसमान सिर पर उठा* लिया है।
14. आग बबूला होना (गुस्से से भर जाना)–दफ़्तर में लेट आने पर अफ़सर राजू पर *आग बबूला* हो गए।
15. आँखें बिछाना (बहुत आदर करना)–नेता के स्वागत में सभी ने *आँखें* बिछा दीं।
16. आँखें फेर लेना (प्रतिकूल होना)–मुसीबत में सभी *आँखें फेर* लेते हैं।
17. आकाश-पाताल का अंतर होना (बहुत अंतर होना)–भारत और पाकिस्तान की नीतियों में *आकाश-पाताल का अंतर* है।
18. आकाश-पाताल एक कर देना (बहुत प्रयत्न करना)–प्रथम आने के लिए नीता ने *आकाश-पाताल एक कर* दिया।
19. आग में घी डालना (क्रोध को बढ़ाना)–उसके असभ्य व्यवहार ने *आग में घी डालने का काम किया।*
20. आँख बदलना (प्रतिकूल होना)–मुसीबत के समय अपने भी *आँखें बदल* लेते हैं।
21. आँख लगना (नींद आना)–दर्द के मारे रातभर रोगी की *आँख न लगी।*
22. ईंट से ईंट बजाना (नष्ट-भ्रष्ट करना)–पांडवों ने कौरव की सेना की *ईंट से ईंट* बजा दी।
23. ईद का चाँद होना (बहुत दिनों बाद दिखाई देना)–आजकल तुम कहाँ रहते हो? तुम तो *ईद के चाँद* हो गए हो।
24. ईंट का जवाब पत्थर से देना (दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार करना)–कारगिल में भारतीय सेना ने पाकिस्तान की सेना को *ईंट का जवाब पत्थर से* दिया।
25. उँगली पर नचाना (इच्छानुसार काम करवाना)–सुरेश की पत्नी उसे अपनी *उँगली पर नचाती* है।
26. उन्नीस-बीस का अंतर (मामूली अंतर होना)–मोहन और सोहन जुड़वाँ भाई हैं। दोनों में *उन्नीस-बीस का अंतर* है।
27. उल्लू बनाना (मूर्ख बनाना)–बदमाश ने हम सबको *उल्लू बना* दिया।
28. एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना (पूरा ज़ोर लगाना)–वह नौकरी पाने के लिए *एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा* रहा है।
29. कमर कसना (तैयार रहना)–मैंने परीक्षा में प्रथम आने के लिए अपनी *कमर कस* ली है।
30. कलम तोड़ना (बहुत सुंदर लिखना)–जयशंकर प्रसाद ने कामायनी लिखने में *कलम तोड़* दी।
31. कान खा जाना (बहुत बोलना)–मोहन जब घर पर आता है तो वह सबके *कान खा जाता है।*
32. कोल्हू का बैल (रात-दिन काम करनेवाला)–*कोल्हू का बैल* बनने पर भी आजकल निर्वाह कठिनता से होता है।
33. खून-पसीना एक करना (बहुत मेहनत करना)–विशाल ने मैच जीतने के लिए *खून-पसीना एक कर* दिया।
34. खरी-खोटी सुनाना (बुरा-भला कहना)–ठीक से काम न करने पर मालिक ने नौकर को *खरी-खोटी सुनाई।*
35. गाल बजाना (डींगें मारना)–टीना करती-धरती तो कुछ है नहीं केवल *गाल ही* बजाती है।

Scanned by CamScanner

36. चार चाँद लगाना (प्रतिष्ठा बढ़ाना)–भारतीय वैज्ञानिकों ने देश की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगा दिए।
37. चिकना घड़ा (जिस व्यक्ति पर उपदेश का कोई प्रभाव न पड़े)–नरेश तो *चिकना घड़ा* है, उसे समझाते हो।
38. छठी का दूध याद आना (कठिनाई अनुभव होना)–पर्वतारोहण करते समय पर्वतारोही को छठी का *याद आ* जाता है।
39. छक्के छुड़ाना (बुरी तरह हराना)–भारतीय सेना ने शत्रु सेना के *छक्के छुड़ा* दिए।
40. जान के लाले पड़ना (गहरे दुख में फँसना)–युद्ध में घिर जाने पर कायर सैनिकों को जान के *पड़ गए*।
41. जी चुराना (परिश्रम से भागना)–अच्छे विद्यार्थी कभी पढ़ाई से *जी नहीं चुराते*।
42. टका-सा जवाब देना (साफ़ मना करना)–सुरेश ने पहले मेरी सहायता करने का वचन दिया था, वक्त आने पर *टका-सा ज़वाब* दे दिया।
43. दाँत खट्टे करना (बुरी तरह हराना)– युद्धक्षेत्र में महाराणा प्रताप ने बाबर के *दाँत खट्टे* कर दिए।
44. दाँतों तले उँगली दबाना (आश्चर्यचकित होना)–ताजमहल को देखकर विदेशी पर्यटक *दाँतों तले उँगली दबाने* लगते हैं।
45. दाल न गलना (सफल न होना)–चलते बनो, यहाँ तुम्हारी *दाल नहीं गलेगी*।
46. नौ-दो ग्यारह होना (भाग जाना)– पुलिस को देखते ही चोर *नौ-दो ग्यारह* हो गया।
47. नाकों चने चबाना (बहुत तंग करना)–शिवाजी ने औरंगज़ेब को *नाकों चने चबवाए*।
48. पाँचों उँगलियाँ घी में होना (बहुत लाभ होना)–महँगाई के कारण आजकल व्यापारियों की *पाँचों उँगलियाँ घी में हैं*।
49. फूला न समाना (बहुत प्रसन्न होना)–बेटे के प्रथम आने का समाचार सुनकर उसके माता-पिता *फूले न समाए*।
50. फूँक-फूँककर कदम रखना (सावधान होकर काम करना)–चारों ओर शत्रु छिपे हैं, अतः *फूँक-फूँककर कदम बढ़ाओ*।
51. बाएँ हाथ का खेल (बहुत सरल काम)–सच को झूठ, झूठ को सच कर दिखाना आजकल वकीलों के *बाएँ हाथ का खेल* है।
52. बाल बाँका न होना (सुरक्षित होना)–बस दुर्घटना में मेरा *बाल भी बाँका न हुआ*।
53. भीगी बिल्ली बनना (भय आदि के कारण डर जाना)–मुख्याध्यापक को देखते ही वह *भीगी बिल्ली* बन गया।
54. माथा ठनकना (संदेह होना)–इतनी रात में उसे अकेला घूमते देख मेरा *माथा ठनक* गया।
55. मुँह में पानी भर आना (लालच पैदा होना)–मिठाई को देखकर बच्चों के *मुँह में पानी भर आया*।
56. मुँह-तोड़ ज़वाब देना (खरी-खोटी बातें सुनाना)–पाकिस्तान की धमकियों का भारत को *मुँह-तोड़ ज़वाब* देना चाहिए।
57. मुँह ताकना (दूसरे पर आश्रित होना)–पिता ने कहा, बेटा! प्रत्येक कार्य में दूसरों का *मुँह ताकना* अच्छा नहीं।
58. रंग में भंग पड़ना (खुशी में विघ्न पड़ना)– सुरेश के जन्मदिवस के उत्सव पर उसके चाचा की सड़क-दुर्घटना में घायल होने की खबर से *रंग में भंग* पड़ गया।

Scanned by CamScanner

59. राई का पहाड़ बनाना (छोटी-सी बात को बढ़ा-चढ़ाकर कहना)—कभी-कभी समाचार-पत्र छोटी-सी खबर को भी *राई का पहाड़ बना* देते हैं।
60. रफू-चक्कर होना (भाग जाना)—डाकू पुलिस को देख *रफू-चक्कर* हो गए।
61. लोहा लेना (मुकाबला करना)—अमेरिका ने सोच-समझकर तालिबान से *लोहा लिया*।
62. लाल-पीला होना (क्रोधित होना)—काम ठीक से न करने पर मालिक नौकर पर *लाल-पीला* हो गया।
63. लोहा मानना (प्रभाव मनाना)—वीरता के मामले में अकबर भी राणा प्रताप का *लोहा मानता* था।
64. लहू-पसीना एक करना (बहुत परिश्रम करना)—आजकल अच्छी तरह निर्वाह करने के लिए *लहू-पसीना एक करना* पड़ता है।
65. श्रीगणेश करना (काम शुरू करना)—छुट्टियों के तुरंत बाद मैं पढ़ाई का *श्रीगणेश* कर दूँगा।
66. हाथ-पैर मारना (बहुत प्रयत्न करना)—पाकिस्तान ने कश्मीर को हासिल करने के लिए खूब *हाथ-पैर मारे*, पर सफल नहीं हुआ।
67. हाथ-पाँव फूल जाना (घबरा जाना)—अचानक पुलिस के आ जाने से उसके *हाथ-पाँव फूल* गए।
68. हवा हो जाना (भाग जाना)—सुरक्षा गार्ड को अपनी तरफ़ आते देखकर चोर *हवा हो गया*।
69. हाथ मलना (पछताना)—अब फेल होने पर *हाथ मलने* से क्या लाभ है?
70. हाथ लगना (प्राप्त होना)—दिन-भर की कठिन मेहनत के बाद उसे केवल साठ रुपये ही *हाथ लगते* हैं।
71. हवाई किले बनाना (झूठी कल्पना करना)—विद्यार्थी जीवन में अकसर लड़के-लड़कियाँ *हवाई किले बनाते* रहते हैं।
72. सिर चढ़ाना (किसी की आदतें खराब होना)—आपने लाड़-प्यार में अपने बेटे को बहुत *सिर चढ़ा लिया* है।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति शब्द लोक और उक्ति दो शब्दों के मेल से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है—लोक प्रचलित कथन। लोकोक्ति का अपना स्वतंत्र अस्तित्व होता है। लोगों द्वारा कही गई कहावतों को ही लोकोक्तियाँ कहा जाता है। लोकोक्तियाँ श्रोता के हृदय पर सीधा एवं गहरा प्रभाव डालती हैं।

1. आम के आम गुठलियों के दाम (दुगुना लाभ)—अनुपम हिंदी व्याकरण पढ़कर मैंने प्रथम श्रेणी भी प्राप्त कर ली और बाद में आधे दामों में बेच भी दिया। इसे कहते हैं, *आम के आम गुठलियों के दाम*।
2. अंधों में काना राजा (मूर्खों में थोड़ा बुद्धिमान)—पुराने समय की बात है जब गाँव में पटवारी को बहुत पढ़ा-लिखा व्यक्ति मानते थे, क्योंकि उस समय वही *अंधों में काना राजा* होता था।
3. आ बैल मुझे मार (स्वयं मुसीबत मोल लेना)—आतंकवादी उसकी जान के पीछे पड़े हैं और वह इतनी रात में भी अकेला घूम रहा है। इसे कहते हैं, *आ बैल मुझे मार*।
4. अधजल गगरी छलकत जाए (कम गुणोंवाला व्यक्ति बहुत दिखावा करता है)—शशांक को देखो, अपने को विद्वान समझता है; परंतु वास्तव में उसे आता-जाता कुछ नहीं। इसे ही कहते हैं, *अधजल गगरी छलकत जाए*।
5. एक पंथ दो काज (एक साथ दोहरा लाभ)—कल मैं दफ़्तर के काम से चेन्नई जा रहा हूँ। वहाँ अपनी बहन से भी मिल लूँगा और अपना काम भी कर लूँगा। इसे ही कहते हैं, *एक पंथ दो काज*।
6. उलटा चोर कोतवाल को डाँटे (अपराधी निरपराध पर दोष लगाए)—एक तो तुमने अपनी कार से मेरा स्कूटर तोड़ दिया और मुझसे ही हरजाना माँग रहे हो। भाई, यह तो वही बात हुई, *उलटा चोर कोतवाल को डाँटे*।

Scanned by CamScanner

7. ऊँची दुकान फीका पकवान (दिखावा अधिक काम कम)—तुम्हारी दुकान की बाहरी शोभा तो अच्छी है, परंतु यहाँ पर जो सामान बनाया जाता है, वह तो बड़े घटिया स्तर का है। इसे कहते हैं, *ऊँची दुकान फीका पकवान।*

8. एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा (एक बुराई के साथ दूसरी बुराई भी आ जाना)—अमर नशा तो करता था, अब जुआ खेलने का भी आदी हो गया है। *एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा।*

9. कहाँ राजा भोज कहाँ गँगू तेली (बहुत अंतर होना)—तुम तुलसीदास की कविताओं की तुलना साधारण कवि की कविताओं से कर रहे हो। अरे! *कहाँ राजा भोज कहाँ गँगू तेली।*

10. कोयले की दलाली से हाथ काला (बुरे काम में बदनामी अवश्य होती है)—तुमने उस बदमाश से अवश्य कर ली है, पर ध्यान रखना, *कोयले की दलाली से हाथ काला* होता है।

11. खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है (बुरी संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है)—जब से विनोद के साथ रहने लगा है, शराब भी पीने लगा है। किसी ने ठीक ही कहा है, *खरबूजे को खरबूजा रंग बदलता है।*

12. खोदा पहाड़ निकली चुहिया (बहुत प्रयत्न करने पर भी लाभ कम होना)—उसने माल का इतना विज्ञापन दिया, परंतु बिक्री हुई कुल तीन सौ रुपए की। यह तो वही बात *खोदा पहाड़ निकली चुहिया।*

13. घर का भेदी लंका ढाए (आपस की फूट हानिकारक होती है)—कुछ सांसदों ने दल में फूट डाल सरकार गिरा दी। इसे कहते हैं, *घर का भेदी लंका ढाए।*

14. चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात (सुख के दिन सदा नहीं रहते)—जब तक तुम यहाँ नौकरी करते हो, अपना घर खूब भर लो, परंतु याद रखो, *चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात है।*

15. चिराग तले अँधेरा (अपनी बुराई न दिखाई देना)—दरोगा जी गुंडों को तो पकड़ रहे हैं, पर अपने घर गुंडागर्दी से अनभिज्ञ हैं। इसे कहते हैं, *चिराग तले अँधेरा।*

16. चोर की दाढ़ी में तिनका (अपराधी स्वयं भयभीत रहता है)—चोरी की बात सुनते ही नौकर के पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। इससे स्पष्ट है कि चोरी उसी ने की है, क्योंकि चोर की *दाढ़ी में तिनका* होता है।

17. जिसकी लाठी उसकी भैंस (शक्तिशाली व्यक्ति)—मिल मालिक ने मज़दूरों की झुग्गियाँ तुड़वा दीं उनकी ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया। किसी ने ठीक ही कहा है, *जिसकी लाठी उसकी भैंस।*

18. जल में रहकर मगर से वैर (जिसके आश्रय में रहे उसी से दुश्मनी करना)—तुम जिस अफ़सर के काम करते हो, उसी की शिकायत करते हो। याद रखो *जल में रहकर मगर से वैर* करना ठीक नहीं

19. डूबते को तिनके का सहारा (मुसीबत के समय थोड़ी सहायता भी बहुत होती है)—आजकल मुन्ना बीमार है, उसकी पाँच सौ रुपए देकर ही सहायता कर दीजिए, क्योंकि *डूबते को तिनके का सहारा* होता है।

20. दूध का दूध पानी का पानी (ठीक न्याय)—सच्चा न्याय वही होता है, जिससे *दूध का दूध पानी का* हो जाए।

21. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का (कहीं का भी न होना)—अरविंद ने नई नौकरी के चक्कर पुरानी नौकरी छोड़ दी और उसे नई नौकरी भी नहीं मिली। इसे कहते हैं, *धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।*

Scanned by CamScanner

22. **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी** (दोष का कारण ही नष्ट कर देना)–रिश्वतखोरी खत्म करने के लिए चरित्रहीन सरकारी अफ़सरों को निकाल देना चाहिए। न चरित्रहीन व भ्रष्ट अफ़सर होंगे, न रिश्वतखोरी होगी, *न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।*

23. **साँच को आँच नहीं** (सच्चे को डरने की आवश्यकता नहीं)–बिना डरे अध्यापक जी को सब बात सच-सच बता दो क्योंकि *साँच को आँच नहीं होती।*

24. **नाम बड़े और दर्शन छोटे** (दिखावा अधिक, वास्तविकता कम)–मैंने इस डॉक्टर का नाम तो बड़ा सुन रखा था। मगर जब दवाई ली तो फ़ीस भी अधिक दी और मैं ठीक भी नहीं हुआ। यह तो वही बात हुई कि *नाम बड़े और दर्शन छोटे।*

25. **पाँचों उँगलियाँ घी में होना** (हर तरह लाभ-ही-लाभ होना)–आजकल उसका व्यापार तो चल ही रहा है साथ ही उसकी पत्नी बैंक में मैनेजर हो गई है। अतः उसकी *पाँचों उँगलियाँ घी में हैं।*

26. **बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद** (मूर्ख व्यक्ति गुणों की परख नहीं कर सकता)–इतना मधुर संगीत शुरू होते ही वह उठकर चल दिया। उसे कार्यक्रम अच्छा नहीं लगा। किसी ने ठीक ही कहा है, *बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद।*

27. **मुँह में राम-राम, बगल में छुरी** (ऊपर से मित्रता हृदय में कपट)–उसकी माला और माथे के तिलक को देखकर लोग उसे भक्त समझने लगे हैं, परंतु असलियत कुछ और ही है। वे नहीं जानते कि उसके *मुँह में राम-राम, बगल में छुरी* है।

28. **लातों के भूत बातों से नहीं मानते** (दुष्ट व्यक्ति बात से नहीं, दंड से मानते हैं)– जब तक चोर की पिटाई नहीं होगी, तब तक वह सच्चाई नहीं उगलेगा, क्योंकि *लातों के भूत बातों से नहीं मानते।*

29. **सौ सुनार की एक लुहार की** (बलवान की एक चोट निर्बलों की सौ के बराबर होती है)–तालिबान ने कई छुटपुट हमले किए, पर अमेरिका ने एक ही आक्रमण से तालिबानियों को तबाह कर दिया। इसे कहते हैं, *सौ सुनार की एक लुहार की।*

...ओ, दोहराएँ

- मुहावरा वाक्य का अंश होता है।
- मुहावरा अपने शाब्दिक अर्थ में प्रयुक्त न होकर किसी **विशेष अर्थ** में प्रयुक्त होता है।
- लोकोक्ति का अपना स्वतंत्र अस्तित्व होता है।
- लोक प्रचलित कथन को ही लोकोक्तियाँ कहते हैं।

...भ्यास

1. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

(क) मुहावरा किसे कहते हैं? इसकी क्या विशेषता है?

(ख) लोकोक्ति किसे कहते हैं? दो उदाहरण लिखिए।

Scanned by CamScanner

		अर्थ
(क)	मुँह ताकना	बुरी तरह हराना
(ख)	दाल न गलना	संघर्ष करना
(ग)	गाल बजाना	संदेह होना
(घ)	छक्के छुड़ाना	पछताना
(ङ)	आग में घी डालना	दूसरे पर आश्रित होना
(च)	पापड़ बेलना	डींगें मारना
(छ)	माथा ठनकना	सफल न होना
(ज)	हाथ मलना	क्रोध को बढ़ाना

3. निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ लिखकर वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) चार चाँद लगाना – .....

(ख) कोल्हू का बैल – .....

(ग) आकाश से बातें करना – .....

(घ) श्री गणेश करना – .....

(ङ) आँख लगना – .....

(च) कलम तोड़ना – .....

4. नीचे दिए गए अर्थ से संबंधित मुहावरे लिखिए–

	अर्थ		मुहावरा
(क)	किसी की आदतें खराब करना	–	.....
(ख)	थोड़े में बहुत	–	.....
(ग)	भाग जाना	–	.....
(घ)	सबसे अलग रहना	–	.....
(ङ)	बहुत प्रयत्न करना	–	.....
(च)	अपना नुकसान खुद करना	–	.....

निम्नलिखित लोकोक्तियों के अर्थ लिखिए–

(क) धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का – .....

(ख) चिराग तले अँधेरा – .....

(ग) ऊँची दुकान फीका पकवान – .....

(घ) घर का भेदी लंका ढाए – .....

(ङ) लातों के भूत बातों से नहीं मानते – .....

(च) पाँचों उँगलियाँ घी में होना – .....

Scanned by CamScanner

फूल और काँ

ठ 5

प्रस्तावना- मूर्धन्य कवि श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' जी ने इस कविता के माध्यम से यह बताना चाहा है कि अच्
कुल में जन्म लेने से व्यक्ति अच्छा ही होगा, यह आवश्यक नहीं। कविवर ने एक ही पौधे से उत्पन्न फूल औ
काँटों के स्वभाव का उदाहरण देकर अपनी बात को स्पष्ट किया है।

जन्म लेते हैं जगह में एक ही
एक ही पौधा उन्हें है पालता,
रात में उन पर चमकता चाँद भी
एक-ही सी चाँदनी है डालता।

मेघ उन पर है बरसता एक-सा
एक-सी उन पर हवाएँ हैं बही,
पर सदा ही यह दिखाता है हमें
ढंग उनके एक से होते नहीं।

छेदकर काँटा किसी की उँगलियाँ
फाड़ देता है किसी का वर-वसन,
प्यार-डूबी तितलियों का पर कतर
भौंर का है बेध देता श्याम तन।

फूल लेकर तितलियों को गोद में
भौंर को अपना अनूठा रस पिला,
निज सुगंधों औ' निराले रंग से
है सदा देता कली जी की खिला।

है खटकता एक सबकी आँख में
दूसरा है सोहता सुर-शीश पर,
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।

-अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

Scanned by CamScanner

जीवन परिचय- श्री अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' का जन्म उत्तर प्रदेश के आज़मगढ़ जिले के निज़ामाबाद नामक स्थान पर 15 अप्रैल, सन् 1865 ई० में हुआ था। इन्होंने खड़ी बोली के काव्य को भाव, भाषा, छंद और अभिव्यंजना की दृष्टि से समृद्ध करने में उल्लेखनीय योगदान दिया। इनके प्रमुख ग्रंथ हैं- *प्रियप्रवास, वैदेही वनवास* और *रसकलश*। *प्रियप्रवास* खड़ी बोली का प्रथम महाकाव्य है। 'हरिऔध जी' का ब्रजभाषा और खड़ी बोली पर समान अधिकार था। 16 मार्च, सन् 1947 ई० में इनकी मृत्यु हो गई।

अभ्यास

शब्द ज्ञान-

जन्म	-	पैदा होना	अनूठा	-	अनोखा
मेघ	-	बादल	निज	-	अपनी
वर	-	श्रेष्ठ, अच्छा	सुगंध	-	खुशबू
वसन	-	कपड़े	सोहता	-	शोभा पाता
पर	-	पंख	सुर	-	देवता
श्याम	-	साँवला	कुल	-	वंश

विषय-वस्तु का ज्ञान

नीचे दिए गए पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर संबंधित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

"मेघ उन पर है बरसता एक-सा
एक-सी उन पर हवाएँ हैं बही,
पर सदा ही यह दिखाता है हमें
ढंग उनके एक से होते नहीं।"

(क) किन पर बादल एक समान बरसते हैं?
(ख) हर किसी के ढंग अलग-अलग क्यों होते हैं?
(ग) हवा एक समान उन पर क्यों बहती है?
(घ) एक डाली पर लगने/खिलने के बावजूद दोनों का स्वभाव कैसा होता है?

प्रत्यास्मरण

1. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

(क) फूल और काँटे में क्या समानता है?
(ख) काँटे का स्वभाव कैसा होता है?
(ग) फूल किस प्रकार के कार्य करता है?
(घ) इस कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?

Scanned by CamScanner

छेदकर _____

_____

_____

_____ तन।

है _____

_____

_____

_____ कसर।

शब्द सामर्थ्य

1. दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिए-

मेघ	बादल	जलद
रात	रातरि	निशा
चाँदनी	ज्योत्सना	कौमुदी
आँख	नेत्र	~~लोचन~~ लोचन
सुर	दैवता	ईश्वर

2. शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए-

आकाश में रात्रि में फैलनेवाली रोशनी	चाँदनी
एक पौधा जिसमें अनेक काँटे होते हैं	गुलाब
फूलों पर मँडरानेवाला कीट	भौंरा
ईश्वर को चढ़ानेवाला भोज्य पदार्थ	प्रसाद

3. पाठ में से विशेषण-विशेष्य शब्दों को अलग चुनकर लिखिए-

जैसे- वर वसन

_____ _____ _____

_____ _____

Scanned by CamScanner

निम्नलिखित अनेकार्थी शब्दों को पढ़िए-

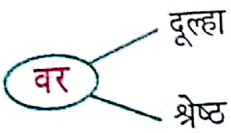

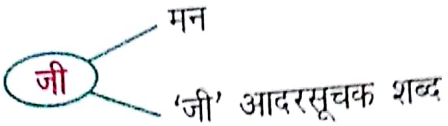

इन शब्दों के दो-दो अनेकार्थी लिखिए। किन्हीं दो अनेकार्थी शब्दों के वाक्य बनाइए।

श्याम	साँवला	श्री कृष्ण
छेद	छिद्र	सुराख
कुल	वंश	पूरा

षा-सौंदर्य

निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए-

चाँद का टुकड़ा — बहुत सुंदर

आँख में खटकना — ना पसंद

दिल की कली खिला देना — बहुत अधिक खुश होना।

द्येतर गतिविधि

1. एक डाल पर लगनेवाले फूल और काँटे की तरह एक कुल में जन्म लेनेवाले विभीषण और रावण। एक का स्वभाव पुष्प के समान तो दूसरे का काँटे के समान। दोनों के स्वभाव के दो-दो बिंदुओं पर कक्षा के सामने अपने विचार रखिए।
2. कौन-सी ऐसी आदतें हैं जिससे हमारे साथियों को कष्ट पहुँचता है? लिखकर बताएँ। हमें दूसरों को सुख पहुँचाने के लिए शिष्टाचार के किन नियमों का पालन करना चाहिए?
3. 'गुण का महत्व सुंदरता से बढ़कर' इस विषय पर कक्षा में वाद-विवाद प्रतियोगिता का आयोजन कीजिए।

Scanned by CamScanner

3. विशेषण शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना

विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक संज्ञा	विशेषण	भाववाचक
सुंदर	सुंदरता	सफल	सफलता	लोभ	लोभी
प्यासा	प्यास	चतुर	चतुरता	हरा	हरियाली
बुरा	बुराई	कुशल	कुशलता / कौशल	निर्धन	निर्धनता
अच्छा	अच्छाई	कठिन	कठिनता	विषम	विषमता
हीन	हीनता	चिकना	चिकनाहट	निर्बल	निर्बलता
पाप	पापी	साफ़	सफ़ाई	खट्टा	खटास
ठंडा	ठंडक	मधुर	मधुरता	ऊँचा	ऊँचाई
राष्ट्रीय	राष्ट्रीयता				

4. क्रिया शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना

क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक संज्ञा	क्रिया	भाववाचक
मिलाना	मिलावट	कमाना	कमाई	चुनना	चुनाव
लूटना	लूट	पीसना	पिसावट/पिसाई	थकना	थकावट /
घबराना	घबराहट	बहना	बहाव	लेना-देना	लेन-देन
लिखना	लिखावट	बैठना	बैठक	मारना	मार
गिरना	गिरावट	कातना	कताई	पूजना	पूजा
उड़ना	उड़ान	कहना	कहावत	जीना	जीवन
खेलना	खेल	धमकाना	धमकी		

5. अव्यय शब्दों से भाववाचक संज्ञा बनाना

अव्यय	भाववाचक संज्ञा	अव्यय	भाववाचक संज्ञा	अव्यय	भाववाचक
धिक	धिक्कार	मना	मनाही	निकट	निकटता
ऊपर	ऊपरी	समीप	समीपता	दूर	दूरी

Scanned by CamScanner